'शेवंता जित्ती हाय!' का हिन्दी रूपांतर :

महाराष्ट्र एक्सप्रेस...

लेखक : प्रल्हाद जाधव

रूपांतर : आत्माराम

पात्र परिचय :

१. पिसाल (४५)

२. सयाजीराव कांबले (३०)

३. आदमी (५०)

४. बालासाहब पाटिल-खंडेराजुरीकर (५५)

अंक एक / प्रवेश पहला

(मंच पर अंधेरा। फोन की घंटी बजने की आवाज। आहिस्ता से परदा उठता है। इसके साथ-साथ मंच पर उजाला होता है। स्टेज पर पुलिस स्टेशन का सेट। पास ही एक कोठड़ी। पुलिस इंस्पेक्टर के बैठने की जगह। कुर्सी टेबल, अन्य जरूरी सामान। सामने चार कुर्सियां। दूसरी तरफ एक बैंच अंदर विंग का विस्तार। यहां पर उपनिरीक्षक और उसका स्टाफ बैठता है। मंच पर पूरा प्रकाश। फोन की घंटी बज रही है। कांस्टेबल पिसाल तेजी से भागकर फोन उठाता है।)

पिसाल : नमस्कार, कांस्टेबल पिसाल बोल रहा हूं... हां... हां... ठीक है, लेकिन तुम कौन हो? (एकदम सावधान हो जाता है) नमस्ते सर... सर, भूल हो गयी... सर, कांबले सर अभी तक नहीं आये... सर, बेहतर, सर... कोई मेसेज? सर इस संबंध में मुझे कुछ नहीं मालूम... यस सर... आते ही... बिना भूले... नमस्ते सर। (फोन रखता है) बाप रे... बाल-बाल बच गया... मुझे क्या पता था कि सामने साहेब हैं... और फिर गलती तो मेरी ही थी न। पहले नाम पूछ लेता तो... साहेब ने कितनी बार समझाया, पर मेरी खोपड़ी में घुसे तब ना। (बाहर से इंस्पेक्टर सयाजीराव कांबले की आवाज सुनाई देती है।)

कांबले : कौन है रे... अरे कोई है! कहां मर गये सारे के सारे... शिंदे... सालुंखे... सालों ने पुलिस स्टेशन को धर्मशाला समझ रखा है। (पिसाल तंबाकू थूक कर, डब्बी जेब में रखते हुए दरवाजे की तरफ भागता है।) पिसाल... ओऽऽ पिसाल... (आवाज देते-देते कांबले अपनी जगह जाता है, सामने से पिसाल, दोनों की भिड़ंत हो जाती है।)

पिसाल : यस सर!

कांबले : अरे तुम्हारे कान है कि खड्डे... कब से गला फाड़ रहा हूं, कुछ पता है?

पिसाल : यस सर!

कांबले : यह क्या, यस सर... यस सर लगा रखी है (कांबले इधर-उधर नजरें दौड़ाता है) शिंदे कहां है और वो सालुंखे कहां मर गया, और पवार... उसका तो कहीं पता ही नहीं लगता... अरे इनकी तो रे... कैसे चलेगा. कम्बख्त एक भी जगह पर नहीं रहता।

पिसाल : (डरा हुआ-सा) लेकिन सर... पवा... र

कांबले : क्या पवार? बोलता क्यों नहीं... क्या बात है... जबान सूख गई क्या? क्या कोई एक्सीडेंट हो गया... नहीं तो, इस ब्रह्ममुहूर्त में किसी का बलात्कार... कुछ तो हुआ है... अरे हरामी बोलता क्यों नहीं?

पिसाल : सर, सब लोग एक रेड पर गये हैं... अभी-अभी सर, आपके आने से थोड़ा पहले ही।

कांवले : अब तक क्यों नहीं बताया... बुत बना क्यों खड़ा था।

पिसाल : सर असल में बोलने का चानस ही नहीं मिला...

कांवले : चान्स नहीं मिला? ठीक है, इतना बन मत– वो घुटनों में सर छुपाये, बाहर कौन बैठा है?

पिसाल : सर, कोई है, आपसे मिलना चाहता है ...

कांवले : मुझसे? क्या नाम बताया... कहां का हैं... काम क्या हैं?

पिसाल : सर, सब पूछा, पर... वो तो कुछ बताने को तैयार ही नहीं है... एक ही बात की रट लगाये हुए है... कांबले साहब से मिलना है, बस... और सर... वो–

कांबले : क्या है?

पिसाल : एकदम टुन्न है... भरपूर, गरदन तक चढ़ाकर आया है।

कांबले : क्याऽऽऽऽ सिर घूम गया तेरा? दारू पीकर पुलिस स्टेशन मे? (गुस्से से) और यह बताते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। साले को गांड पर लात मार कर बाहर निकाल, और कह दे... आज मुझे किसी से नहीं मिलना। बहुत काम है...

पिसाल : यस सर...

कांबले : जा निकाल साले को बाहर... एक मत सुनना... ज्यादा बोले तो... और सुन–

पिसाल : यस सर?

कांबले : एक बढ़िया कड़क चाय–

पिसाल : यस सर! (बाहर की तरफ निकलता है)

कांबले : कोई मेसेज? फोन?

पिसाल : सर, गोन्सालविस साहब का फोन था...

कांबले : गोन्सालविस साहब का? क्या कह रहे थे? कुछ खास? कहां से बोल रहे थे?

पिसाल : सर, इतना तो कुछ बोले नहीं... बस कहा कि, कह दीजो बाद में फोन करूंगा।

कांबले : ओ.के.,ओ. के.! अब तुम जाओ... जरा वो स्टेशन डायरी तो देते जाना... (पिसाल डायरी कांबले के सामने रखता है, एड़ियां भिड़ाकर सलाम ठोंकता है और बाहर चला जाता है। कांबले डायरी की एन्ट्रीज् देखता रहता है। बाहर से पिसाल और उस आदमी के आपस में झगड़ने की जोर-जोर से आवाजें आती हैं)

पिसाल : ए... ए... उठ निकल यहां से... ए. दारूड़िये... चल बाहर निकल...

आदमी : अरे, लेकिन मुझे साहब से मिलना है...

पिसाल : इस समय साहेब किसी से नहीं मिलेंगे... सुना नहीं... अब निकलो यहां से!

आदमी: लेकिन सुनो तो, मैं साहब का ज्यादा वक्त नहीं लूंगा।

पिसाल : ज्यादा और कम क्या... साहब आज किसी से नहीं मिलेंगे... तुम चुपचाप निकलते हो या फिर प्रसाद लेकर ही जाने की ठान रखी है... (पिसाल उसकी बांह पकड़कर उठाता है)

आदमी : ओऽऽऽ हाथ मत लगाओ... ताकत आजमाने की कोई जरूरत नहीं... मैं कोई चोर-उच्चका नहीं हूं. समझे?

पिसाल : अब तू मुझे बतायेगा कि चोर-उच्चका किसे कहते हैं? लगता है तुझे जूतों का प्रसाद ही चाहिए... उठ उठ! तेरी तो मादरचोद! दारूड़िये... थाने में तेरा क्या काम... उठता है कि नहीं?

आदमी : खबरदार! अगर हाथ उठाने की जरा भी कोशिश की, तो समझ लो, मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। इंस्पेक्टर-जनरल से तुम्हारी शिकायत करूंगा और जरूरत पड़ी तो सी. एम. तक भी जा सकता हूं... (पिसाल जरा ढीला पड़ जाता है) समझते क्या हो? सुबह से देख रहा हूं, पुलिस थाना नहीं हुआ... कोई बुचड़खाना हुआ... न आदमी की पहचान न चोर की... जो थाने आये वे सब चोर.. थोड़ी शर्म करो रेऽऽऽ

कांबले : (एकदम डिस्टर्ब होकर उठता है) कौन चिल्ला रहा है... चुप रहो... पुलिस स्टेशन है, कोई मछली बाजार नहीं... पिसाल... ओऽऽ पिसाल...

पिसाल : (आदमी की गरदन पकड़कर घसीटते हुए भीतर ले आता है) देखो साहेब... यही है वो आदमी... मेरी तो बिल्कुल नहीं सुनता... आपसे मिलने के लिए हठ धरे बैठा है... ऊपर से भाषण देता है... कहता है कि पुलिस स्टेशन है कि बूचड़खाना!

कांबले : (उठकर दरवाजे तक जाता है) जब तुम्हें एक बार कह दिया कि मेरे पास टाइम नहीं है तो फिर तुम सुनते क्यों नहीं? (फिर उस आदमी को देखता है, करीब जाता है...) क्या है रे बेवड़े... क्यों मरने आया यहां?

गांव में क्या घूरे कम हैं... वहां सूअरों के बीच तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है, जो यहां मरने चला आया? जा वहीं... (धक्का देता है) जा मर साला... उठते ही पीना शुरू कर देता है क्या रे?

आदमी : (हाथ जोड़कर) सर, घूरा गंदगी डालने की जगह होती है... औ उसी की वजह से, गांव साफ-सुथरा रहता है... गांव के लोगों की सेहत अच्छी रहती है।

कांबले : लगता है सूअर संस्कृति में पैदा हुए हो!

आदमी : हो सकता है परंतु, अगर किसी की सांस्कृतिक पहचान करनी हो तो, सबसे पहले, उस जगह की जांच-पड़ताल करनी चाहिए, जहां वह रहता है, और माननीय कांबले सर, यह काम तो हमारे जैसे सूअर ही करते हैं... हमारी वजह से ही तुम लोग इंसानों की तरह रह पाते हो...

कांबले : खामोश, यह तुम्हारे बाप का घर नहीं है, जहां दारू पीके बकवास करते रहो... (कालर पकड़कर भीतर खींचता) यह पुलिस स्टेशन है, समझे? और कान खोलकर सुन लो, मुझे होशियारी सिखाने की कोशिश कभी मत करना... अपने आपको अफलातून समझते हैं...

आदमी : अब अफलातून समझने का वक्त कहां रहा... अब तो–

"मैंने महसूस किया कि मैं वक्त के

एक शर्मनाक दौर से गुजर रहा हूं

अब ऐसा वक्त आ गया है जब कोई

किसी का झुलसा हुआ चेहरा नहीं देखता है

अब न तो कोई किसी का खाली पेट देखता है,

न थरथराती हुई टांगें

और न ढला हुआ 'सूर्यहीन कंघा' देखता है

हर आदमी सिर्फ अपना धंधा देखता है

सबने भाईचारा भुला दिया है

आत्मा की सरलता को मारकर मतलब के अंधेरे में

एक राष्ट्रीय मुहावरे की बगल में

सुला दिया है सहानुभूति और प्यार

अब ऐसा छलवा है जिसके जरिये

एक आदमी दूसरे को, अकेले अंधेरे में ले जाता है

और उसकी पीठ में छुरा भोंक देता हैं

मैंने देखा है कि इस जनतांत्रिक जंगल में

हर तरफ हत्याओं के नीचे से निकलते हैं

हरे-हरे हाथ और पेड़ों पर पतों की जबान बनकर लटक जाते हैं वे ऐसी भाषा बोलते हैं जिसे सुनकर

नागरिकता की गोधूलि में घर लौटते हुए मुसाफिर

अपना रास्ता भटक जाते हैं"

कांबले : क्या... यह क्या सुना रहे हो?

आदमी : मैं तो यह बता रहा था कि धूमिल जैसा महान कवि ही हमारे इस तथाकथित लोकतंत्र की धज्जियां उड़ा सकता है। लोकतंत्र के खोखलेपन को उजागर कर सकता है और यह काम वही कर सकता है सर, जो हमेशा अन्याय के खिलाफ लड़ने के नशे में धुत रहता है। जैसे मैं...

कांबले : तुम मुझे न्याय अन्याय की बातें सिखाने आये हो?

आदमी : सिर्फ इतना बताना चाहता हूं कि पिया हूं पर, पूरे होशो हवास में हूं। सच्चाई को आरपार देख सकता हूं... जैसे एक्सरेज!

कांबले : हूं, तो आप कहना चाहते हैं कि आप पूरे होश में हैं... यह तो बड़ी ही खुशी की बात है... कहिये हुजूर! आपकी क्या खिदमत की जाय? (पिसाल को) तूम खड़े-खड़े क्या तमाशा देख रहे हो... जाओ मेरे लिए एक चाय लेकर आओ... जल्दी...

पिसाल : यस सर! (सेल्यूट ठोंकता है और चला जाता है)

आदमी : (हाथ जोड़कर नतमस्तक खड़ा) श्रीमान मैं बहुत तकलीफ में हूं. मुझे मदद की सख्त जरूरत है.

कांबले : हूंऽऽऽऽ (गरदन हिलाता है) हूं... क्या तकलीफ है सर आपको? (ऊपर से नीचे तक देखता है) जरा हम भी तो सुने...

आदमी : सर, पहले एक सादा-सा सवाल करने की इजाजत चाहता हूं।

कांबले : हां... कहो... इजाजत हैं।

आदमी : सर, बाहर नेमप्लेट देखी तो, मन में आपके दर्शन करने की तीव्र इच्छा प्रकट हुई। सो, अंदर चला आया... मेरा खयाल है आप ही हैं, सयाजीराव कांबले?

कांबले : शक की कोई गुंजाइश?

आदमी : एक शंका तो है मन में, सोचता हूं आप ही से क्यों न पूछ लिया जाये।

कांबले : हां... कहो, क्या कहना चाहते हो... मैं ही हूं सयाजीराव कांबले।

आदमी : 'आप', आप वही कांबले सर, वो विद्या सोडोलीकर केस वाले? बड़ा नाम हुआ था आपका (जरा सोचता है।) अब समझ में आयी बात... बहुत देर से परेशान था, कहीं मैं गलती तो नहीं कर रहा हूं... नहीं... अब ठीक है... सहसा मैं गलती करता नहीं हूं... फिर भी मैंने सोचा पूछ लेने में हर्ज ही क्या है... क्यों ठीक है न सर?

कांबले : (गंभीर होता है, पर प्रकट नहीं करता) इन फालतू बातों से तुम्हें क्या लेना देना... तुम तो यह बताओ कि तुम्हारी प्रोब्लम क्या है?

आदमी : वैसे, मेरी अपनी क्या प्रोब्लम हो सकती है सर? बस, मैंने आपसे अर्ज की थी कि नेमप्लेट देखी और दर्शन करने की तीव्र इच्छा जाग्रत हो गई थी, सो... सर, मैं, आपको डिस्टर्ब तो नहीं कर रहा हूं... वैसे, ऐसा करने का मेरा कोई इरादा तो नहीं था... फिर भी–

कांबले : देखो मिस्टर, तुम अपनी बकवास बंद करो और जो कहना है साफ-साफ कहो, जल्दी कहो। मेरे पास सचमुच टाइम नहीं हैं।

आदमी : शुक्र है, आप कुछ सुनने की मुद्रा में तो आये... सर, बात तो मैं मुद्दे की ही करूंगा, लेकिन पहले यह तय हो जाय कि आप सचमुच में वही सयाजीराव कांबले हैं, जिनका ताल्लुक फेमस विद्या सोडोलीकर केस से रह चुका है... फिर तो आगे की बात बहुत ही आसान हो जायेगी।

कांबले : तुम पहेलियां क्यों बुझा रहे हो, साफ-साफ बात क्यों नहीं करते?

आदमी : आप खफा तो नहीं होंगे! सर,

कांबले : नहीं... नहीं... कहो... बेधड़क कहो... डरने की क्या बात है?

आदमी : (थोड़ा सोचता है) जहां तक सर, मुझे याद है, विद्या सोडोलीकर मर्डर केस में आप पर आरोप था कि आपने अपनी जबान बंद रखने की बड़ी तगड़ी कीमत वसूल की थी। अगर मेरी याददाश्त ठीक है तो, पूरे दो लाख रुपये। सर, मैं झूठ तो नहीं बोल रहा हूं?

कांबले : सरासर झूठ बोल रहे हो... जैसे कोई गधे के सिर पर सींग की बात करता हो... एकदम झूठ... वह भी बे सिर-पैर की।

आदमी : आरोप तो था ही... आप भी नकार तो नहीं सकते. सिद्ध नहीं हुआ... यह अलग बात है।

कांबले : सिद्ध नहीं हुआ से तुम्हारा क्या मतलब? जब आरोप था ही नहीं तो क्या खाक सिद्ध होगा? अदालत ने मुझे... बाइज्जत बरी किया है।

आदमी : मेरा अंदाज सही निकला. तो आप ही हैं वो सयाजीराव कांबले - फेमस विद्या सोडोलीकर मर्डर मिस्ट्री वाले। क्यों ठीक है न सर?

कांबले : हां, ठीक तो है पर, इससे तुम्हें क्या लेना-देना?

आदमी : सर... क्या आपको सचमुच ऐसा लगता है... कि आप निर्दोष हैं?

कांबले : एकदम निर्दोष। साफ-सुथरे धुले चावलों के तरह। (और एकदम उच्चक्कर) लेकिन तुम यह पूछने वाले हो कौन? जा अपना मुंह काला कर... गेट आउट फ्रोम हियर... आई से गेट आउट (कालर पकड़कर धकेलता है) साला, सुबह - सुबह भेजा खा रहा है।

आदमी : (अपने आपको सम्हालते हुए) आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है। मैं... यकीन मानिये, कतई आपका भेजा खाने नहीं आया और सर, जो मुझे कहना है, उसे तो आपने कहने ही नहीं दिया। प्लीज, आप मेरी बात तो सुनिये... शेल आई टेल यू ट्रूथ?

कांबले : मुझे कुछ नहीं सुनना... पहले तुम यहां से दफा हो जाओ... एक मिनिट भी यहां रुके तो आई विल थ्रो यू आउट!

आदमी : कोई बात नहीं... धक्के मारकर निकला तो रहे हो, पर कह देता हूं... बाद में पछताना पड़ेगा...

कांबले : अरे जा रे... तेरे जैसे छप्पन सौ साठ फिरते रहते हैं... अब जाते हो कि... सिपाही बुलाऊं...

आदमी : जाने को तो चला ही जाऊंगा सर, लेकिन एक बार फिर से कह देता हूं... प्रपोजल आपके फायदे का है...

कांबले : जा, जा, बड़ा आया है मेरे फायदे की बात करने वाला! जरा बता तो, तू होता कौन है, मेरे फायदे की सोचने वाला?

आदमी : यह भी बताऊंगा, पर, पहले जरा आपका गुस्सा ठंडा हो जाय... फिर... वैसे देखा जाय तो आपका गुस्सा वाजिब है ... आपका क्या दोष... बात ही कुछ ऐसी है, किसी को भी गुस्सा आ सकता है। लेकिन आपके इस गुस्से के एक बात तो साफ हो जाती है कि आप हैं - सौ टक्के निर्दोष। तब भी और अब भी...

कांबले : यह बात अदालत भी मान चुकी है... मुझे तुम्हारे जैसे फालतू लोगों के सर्टीफिकेट की कोई जरूरत नहीं! अब तुम यहां से दफा हो जाओ... इसी में तेरा भला है और मेरा भी...

आदमी : नहीं साहब, नहीं... आप बेदाग छूट गये, यह बात सही है, लेकिन लगातार चार-पांच साल तक सरे आम आपकी जो बदनामी होती रही... उसका क्या? और इस बदनामी की वजह से आपको जो मानसिक कष्ट भोगना पड़ा... उसकी कोई कीमत नहीं? उसका कोई हिसाब है आपके पास? शायद आप यह नहीं जानते, यह एक ऐसा नुकसान है जिसकी भरपाई बहुत मुश्किल है। जरा सोचिये ! क्या कुछ गलत कह रहा हूं?

कांबले : मैं निर्दोष छूटा, यह खबर तमाम अखबारों में छपी थी। तुम्हें मालूम है। बोलो छपी थी कि नही?

आदमी : चार लाइनों की लंगोटी छाप खबर... और आप समझते हैं कि उससे आपके तमाम नुकसानों की भरपाई हो गई। मैं जानता हूं... उस अपमान ने आपके कलेजे को किस कदर... गहरे तक चीर दिया था। आज तक उसके असर से उबर नहीं पाये। मैं जानता हूं... आपके मन में बार-बार उस अपमान का बदला लेने की बात आती है। बार-बार आपके मन में फिर से जनता का भरोसा जीतने की इच्छा तो होती है। कब तक इस धधकती आग में जलते रहेंगे... कहो क्या कुछ गलत कह रहा हूं?

कांबले : पर तुम, इन तमाम बातों को क्यों जानना चाहते हो?

आदमी : इसलिए कि अब इस मानसिक क्लेश से छुटकारा पाने का मार्ग मिल चुका है। और वही मैं आपको बताने आया हूं...

कांबले : कैसा मार्ग? और किस क्लेश से छुटकारे की बात करते हो? मुझे कोई क्लेश- व्लेश नहीं है। अब तुम जाओ बाबा जाओ! .प्लीज.... गो अवे!

आदमी : शेवंता को ढूंढ निकालने का मार्ग...

कांबले : (आश्चर्यचकित है) शेवंता... कौन शेवंता? क्या हुआ उसे? क्या वह कहीं खो गयी है?

आदमी : इसका पता लगाना आपका काम है।

कांबले : फिर वही बात! भई कितनी बार कहा, साफ-साफ क्यों नहीं कहते?

आदमी : मुझे सिर्फ इतनी-सी जानकारी मिली है कि शेवंता अभी तक जीवित है। और इतनी-सी जानकारी के बलबूत आपको शेवंता को ढूंढ निकालना है।

कांबले : (जरा गुस्से में) क्या नाम है तुम्हारा?

आदमी : नाम तो कुछ भी हो सकता है- मसलन सोमाजी गोमाजी कापसे या फिर दगडू धोंडू फतरे, इससे क्या फर्क पड़ता है।

कांबले : तुम्हें मालूम है यह पुलिस स्टेशन है, यहां पर बे सिर-पैर की बातों का कोई मीनिंग नहीं होता। यहां पर हर बात, समझ में आने लायक, साफ-सुथरी होनी चाहिए... सबूतों सहित... समझे?

आदमी : मैं आपके सामने, एक जीता-जागता इंसान खड़ा हूं... क्या आपको इसका भी सूबत देना होगा?

कांबले : वक्त आने पर यह भी साबित करना पड़ता है कि तुम जिंदा हो...

आदमी : सर, गवाहों और कानून के बलबूते फाइलों में तलाशते रहने से इंसाफ कभी पकड़ में आया है? लोगों ने इंसाफ को इस लालफीताशाही के कारागार में हमेशा ही घुट-घुट कर दम तोड़ते देखा है... दम तोड़ते... इसलिए कहता हूं कि इंसाफ की जंग, खुले मैदान में लड़ी जानी चाहिए। इन फाइलों में नहीं... बोलो... तैयार हो? अगर हो तो, शेवंता को ढूंढना ही इस जंग की शुरुआत समझो। मेरे नाम गांव का, इस जंग का कोई ताल्लुक नहीं है। बस यही सत्य है कि शेवंता जीवित है और उसे ढूंढ निकालना आपका काम... प्लीज सर, एक बार शेवंता को ढूंढ निकालो, बस, फिर देखो मजा... मैंने आज तक किसी के पांव नहीं छूए... लेकिन आपको दंडवत प्रणाम करता हूं... मेरा दिल कहता है कि आप शेवंता को जरूर ढूंढ निकालेंगे (दंडवत करता है)

कांबले : (ऊपर ऊठाकर) क्या लगती है वह तेरी?

आदमी : कुछ नहीं... कुछ नहीं लगती...

कांबले : क्या कहा, कुछ नहीं?

आदमी : यस... कुछ नहीं लगती... यहां तक कि मैंने उसे देखा तक नहीं।

कांबले : फिर उसको लेकर इतने तड़प क्यों रहे हो?

आदमी : आप यह कहना चाहते हैं कि जिसका इस दुनिया में कोई नहीं है, उसे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का हक भी नहीं है? शेवंता पर जुल्म हुआ है, उस पर अत्याचार हुए हैं और कठिनाई तो यह है कि उसकी

तरफ से बोलने वाला कोई नहीं है। मैं जानता हूं आप ही यह काम कर सकते हैं। मुझे आप पर पूरा भरोसा है। प्लीज।

कांबले : यह क्या प्लीज प्लीज लगा रखी है। इस तरह थोड़े ही होता है काम। उसका अपना एक तरीका है... तुम्हारी सुनने लगा तो मेरे लिए तो पागल होने का टाइम आ गया समझो...

आदमी : ऐसा हो जाय तो आपके भाग्य खुल जायेंगे (कांबले जरा गुस्से में उसकी तरफ देखता है) प्लीज। बुरा मत मानिये, मेरे कहने का मतलब यह है कि पागल आदमी पूरी तरह से निर्भय होता है... और इन दिनों तो ऐसे लोग पुलिस डिपार्टमेंट में भी कई हैं? आपसे क्या छुपा है!

कांबले : (फोन की तरफ मुड़ते हुए) लगता है पागल खाने का रास्ता भूलकर इस तरफ आ गये हो, ठहरो, अभी वहीं रवानगी करवा देता हूं। तुम्हारे लिए यही ठीक रहेगा... क्यों ठीक है न... एम्बूलेंस बुलवा लेता हूं (फोन घूमता है)... (मन में, पर तेज आवाज में) साला... पागल करके छोड़ेगा... कहता है, शेवंता जीवित है। उसे ढूंढ निकालो... कौन - कहां की, कोई अता-पता नहीं... बस ढूंढ निकालने की रट लगा रखी है... कम्पलेंट लिखवाने की कहो तो... खुद का ही नाम पता मालूम नहीं... साले ने परेशान कर रखा है... एक दम पागल है... यह फोन भी इसी की तरह है। (पटकता है) क्या विचित्र स्थिति है!

आदमी : जिसकी कोई जाति (बोलते-बोलते रुकता है)... जरा, एक क्षण के लिए शांति से विचार तो करिये सर... विचित्र तो है, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि यही वस्तुस्थिति है, प्लीज आप इस मामले पर गौर करके देखिये तो...

कांबले : तो (चिढ़कर) तो अब मैं क्या करूं?

आदमी : विधिवत कम्पलेंट और कुछ इधर-उधर के सुराग, इनके सहारे तो कोई नकचढ़ा छोकरा भी मंजिल तक पहुंच सकता है। सिर्फ इस एक वाक्य के सहारे पर कि 'शेवंता जित्ती हाय' अर्थात शेवंता जीवित है, उसको खोज निकालना ही अपने आप में एक चैलेंज है। इतने से सुराग से मंजिल तक पहुंचिये तो लोग आपकी वाह-वाह करेंगे। हो सकता है आपको राष्ट्रपति पदक मिल जाय और तो और इससे भी बड़ी बात यह होगी कि विद्या सोडोलीकर मर्डर केस में आपकी इज्जत का जो कचरा हुआ था, उसे वापिस हासिल किया जा सकता है। मुझे नहीं लगता कि इतना बड़ा मौका फिर कभी मिले। शेवंता मिल गई तो आपके सारे पाप धुल जायेंगे - मुझे उम्मीद है कि आप जैसा समझदार पुलिस अफसर इस सुनहरी मौके को हाथ से नहीं जाने देगा। प्लीज... टेक इट सीरियस...

कांबले : (फोन करने का विचार छोड़ता है) आखिर यह शिकायत लेकर तुम, मेरे पास क्यों आये हो?

आदमी : इसकी कोई खास वजह नहीं है। महज एक इत्तफाक है। आइ केन से 'ए जेनुइन कोइंसिडेंट । गाड़ी इस शहर में आकर रुकी... यहां उतर गया। पुलिस स्टेशन ढूंढ रहा था, जो पहला पुलिस स्टेशन दिखा, उसमें घुस गया। यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मुझे इस शहर के बारे में बहुत कुछ मालूम नहीं है - थाने के बाहर आपके नाम की प्लेट देखी... जी खुश हुआ। मैंने सोचा, चलो ईश्वर मुझे यहां लाया है, उसकी इच्छा है कि मेरे हाथों से एकाध पुण्य का काम हो जाय और... आपके शुभ करकमलों से वह संपन्न हो... सब प्रभु की कृपा है...

कांबले : तुम कैसे जानते हो कि शेवंता जीवित है?

आदमी : मैंने एक जगह लिखा हुआ पढ़ा था।

कांबले : कहां पढ़ा?

आदमी : (शांत)

कांबले : सुना नहीं... कहां पढ़ा?

आदमी : एक शौचालय में!

कांबले : शौचालय में, तुम्हारा मतलब टायलट में?

आदमी : है न आश्चर्य की बात... पर हकीकत है... बचपन से इधर-उधर घूरे सूंघते फिरने की आदत होने की वजह से, मेरे ध्यान में आया कि हो न हो यहां कोई रहस्य छुपा हुआ है।

कांबले : ठीक-ठीक बता क्या लिखा हुआ था। आदमी : यहीं कि 'शेवंता जित्ती हाय' बस इतना ही- सिर्फ एक वाक्य... दो तीन बार पढ़ा... जैसे किसी बीमारी के जंतु शरीर में घुसते हैं, वैसे ही एक बात मेरे दिमाग में घुस गई और मेरा दिमाग चल निकला- कौन है शेवंता, कहां की रहने वाली, क्या हुआ होगा उसके साथ। वह जिंदा है, इसका क्या मतलब, उसे कौन मारना चाहता था, क्यों मारना चाहता था, क्या किसी ने उसे मारने की कोशिश की, ऐसा क्या हुआ होगा कि मरने- मारने तक की नौबत आ गई... ऐसे सैकड़ों सवाल मेरे दिमाग में चक्कर काटने लगे। सच कहूं तो शेवंता इस नाम से ही मेरे मन में अपार करुणा उत्पन्न हुई। मेरी आंखों के सामने कई खौफनाक दृश्य नाचने लगे, एक अनपढ़, असहाय, गांव की भोली-भाली औरत, दया की भीख मांगती हुई अरे, मुझे कोई बचाओ... बचाओ रे मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं... दया करो, मुझे छोड़ दो... मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा... तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं... (फिर वातावरण धीरे-धीरे नार्मल होता रहता है)- सर, मुझे उस समय पूरा विश्वास हो गया था कि हो न हो... शौचालय में लिखे इन लफ्जों के पीछे कोई भयानक कुकर्म छुपा हुआ

है... उसी क्षण मैंने तय कर लिया था कि यह मामला पुलिस को सौंप देना चाहिए और फिर सीधा आपके पास चला आया...

कांबले : फर्ज करो, मैं तुम्हारी बात पर भरोसा कर लेता हूं, तो सबसे पहले मुझे उस शौचालय को ढूंढना होगा, जिसमें, जैसा कि तुम कहते हो कि लिखा हुआ था - शेवंता जीवित है।

आदमी : लेकिन यह तो बहुत ही मुश्किल काम है सर।

कांबले : इसमें क्या मुश्किल है।

आदमी : वह तो रेलगाड़ी का शौचालय था ।

कांबले : क्याऽऽऽऽ

आदमी : सर, मैं तब महाराष्ट्र एक्सप्रेस में यात्रा कर रहा था। पेशाब करने गया था और जैसा कि मैंने आपको बताया, दिमाग वहीं अटक गया, सच मानो अभी तक वहीं अटका हुआ है... काम है तो बहुत मुश्किल... पर बहादुरी तो ऐसे काम करने में ही है। आपको नहीं लगता...

कांबले : लगता तो है, पर सबसे पहले मुझे यह बताओ कि शेवंता का पता लगाने में तुम्हारा क्या फायदा है?

आदमी : आप फायदे की बात करते हैं... मैं सोचता हूं कि अगर वह नहीं मिली तो मेरा बहुत बड़ा नुकसान हो जायेगा।

कांबले : सो कैसे?

आदमी : यही कि एक साधारण मामले की तह तक नहीं पहुंच पाने का दुख... मरते दम तक पीछा करता रहेगा।

कांबले : तो तुम अपने मन की शांति के लिए मेरा इस्तेमाल करना चाहते हो!

आदमी : नहीं... नहीं... बात दूसरी है... और क्या आपने इस गोल्डन चांस को यूं ही जाने दिया तो आपको पछतावा नहीं होगा?... असल में, जहां तक इस मामले का सवाल है, मुझे अपनी मनःशांती से आपकी फिक्र ज्यादा है। अब आप पूछेंगे, वो कैसे, तो मैं बताये देता हूं कि विद्या सोडोलीकर मर्डर केस से मुक्ति हासिल करने का यही एक मात्र रास्ता है। और वह है शेवंता को ढूंढ निकालना।

कांबले : तुम्हें मेरी इतनी फिक्र क्यों?

आदमी : मुझे शेवंता की इतनी फिक्र क्यों है, यह भी तो उतना ही फालतू सवाल है। इसका अर्थ इतना ही है कि एक गरीब, भोली, असहाय अनपढ़ औरत की चीख, जो मदद के लिए पुकार रही है, विनंती कर रही है अपने जीवन की भीख मांग रही है- आपसे मांग रही है, मुझसे मांग रही है। मेरा सवाल है कि कोई भी विवेकशील व्यक्ति इस मामले को लेकर कभी चुप नहीं बैठ सकता और मैं देख रहा हूं... आपके अंदर ऐसा एक आदमी जिंदा है। चुपचाप सुन रहा है। हो सकता है इस मौके पर वह फिर से जाग उठे... और सर, यही तो आपका असली कर्तव्य है। मैं एक बार फिर अपना सिर आपके पांवों में रखता हूं (वह ऐसा ही करता है) (कांबले उसे उठाता है। उसके मुंह से दारू की बास का भभका आता है, कांबले अपना मुंह दूसरी ओर फेर लेता है)

कांबले : छ...छ... कितनी दुर्गंध आती है... कहां मिल जाती है सुबह-सुबह... क्यों पीते हो यह गंदगी?

आदमी : (निर्लज्ज हंसी हंसता है)

कांबले : नाऊ आई गोट इट... ज्यादा दारू पीने से तुम्हारी मति मारी गई है और इसी बेहोशी में तुम कुछ भी बकवास करते रहते हो... आई हेट ड्रंकर्ड्स लाईक यू... आई हेट यू - डू यू अंडरस्टेंड? नाऊ गेट आउट.. आइ से गेट लॉस्ट...

आदमी : मैंने कबूल किया ना और एक बार फिर कबूल करता हूं कि मैंने दारू पी है। लेकिन यह किसने कहा कि दारू पीने से मति भ्रष्ट हो जाती है (थोड़ा तेज) और आप लोगों ने यह कैसी प्रथा बना रखी है कि दारू पीने वालों का तिरस्कार किया जाय? आया हूं तब से देख रहा हूं... दारू क्या पीली जैसे कोई जहर पी लिया हो... लगातार बेइज्जत किये जा रहे हो!

कांबले : तब क्या किया जाय... जनाब का आदर-सत्कार किया जाय?

आदमी : क्यों नहीं... एक समझदार आदमी के दारू पीने से, अगर दारू की इज्जत बढ़ती हो तो यकीनन उस शख्स का आदर-सत्कार किया जाना चाहिए। आप जानते हैं, किन लोगों ने दारू को इतना बदनाम कर रखा है? उन मवाली बेवड़े लोगों ने, जिनकी पाचन शक्ति बहुत घटिया है। वे लोग जो इस अमृत को अपने हलक में उड़ेल-उड़ेल कर मर तो जाते हैं लेकिन कभी पीना नहीं सीखते। आपको एक बात बता हूं... जो लोग चुल्लूभर पीकर लड़खड़ाने और बड़बड़ाने लगते हैं न... असल में वे पहले ही घूंट में दारू के गुलाम हो जाते हैं... अब आप से क्या छुपा है - ऐसे सैकड़ों गांडूओं से तो आपका रोज ही पाला पड़ता होगा। इसलिए मैं कहता हूं सर, इन घटिया किस्म के बेवड़ों से इस अमृत पदार्थ को मुक्ति दिलाई जाय... चाहे तो आप यह पवित्र काम करके ढेर सारा पुण्य कमा सकते हैं। सर, मैंने सैकड़ों अच्छे-बुरे अवसरों पर दारू पी है पर क्या मजाल है कोई मुझ पर अंगुली उठाकर यह कहे कि देखो यह बहक रहा है... लड़खड़ा रहा है, बड़बड़ा रहा है। कभी नहीं... नो... नेवर...

नेवर... ...अरे पीने से तो दिमाग के रेशे रेशे खुल जाते हैं... एक अद्भुत विश्व के दर्शन होते हैं... सच्चाई की एक अनोखी दुनिया दिखाई देती है... इसे वही अनुभव कर सकता है जिसने दारू को बाइज्जत बामुलाहिजा पी है, और सदा उसकी इज्जत बढ़ाई है...

कांबले : आई.सी.! अब समझा... कि कहां से जन्मी है यह शेवंता (करीब जाकर) तो यह तुम्हारी अद्भुत दुनिया की पैदाइश है। कल्पना की औलाद... शेवंता... वाह भई वाह, मान गये... पुलिस डिपार्टमेंट में काम करते-करते एक उम्र बीत गई पर तुम्हारे जैसा दूसरा कोई नहीं देखा।

आदमी : नो... नो... यह न तो कल्पना की औलाद है और न अद्भुत दुनिया की औलाद ... प्लीज सर, मैं पीया हुआ हूं लेकिन इसी दुनिया के सत्य को बयान कर रहा हूं... जिसमें आप हम रहते हैं... आप मेरी बात पर यकीन क्यों नहीं करते... शेवंता जीवित है, मैं पूरे होशो हवास में बोल रहा हूं और जरूरत पड़ने पर निराला की 'राम की शक्ति पूजा' हू-बहू सुना सकता हूं.... प्लीज व्हाइ डोंट यू बिलीव मी...

कांबले : अच्छा-अच्छा, करता हूं... करता हूं... अब यह बताओ की हजारों मील लंबी भारतीय रेल और उसके लाखों डब्बे, सैकड़ों रेल्वे स्टेशन... इतने बड़े जंगल में, मैं उस डब्बे को कहां ढूंढूं जिसके शौचालय में लिखा है कि 'शेवंता जित्ती हाय'। और फर्ज करो वह मिल भी जाय तो इस बात का कैसे पता किया जाय कि यह शेवंता किस गांव की है और घटना किस गांव में घटी है? यह तो रेत का महल बनाने जैसी बात हो गई। (उत्तेजित होकर) और यह सब तुम्हारी इस खोपड़ी की खुराफात है... दारू की इज्जत करने वाली इस खोपड़ी की ... फिर भी तुम्हारा दावा है कि तुम पूरे होशो हवास में हो।

आदमी : यस सर... आई मीन इट...

कांबले : फिर तुम ही बताओ... सिर्फ इन तीन लफ्जों के सहारे उस औरत को... आई मीन, असहाय, गरीब-दया के लिए याचना करने वाली... उस... तुम्हारी शेवंता को कैसे ढूंढा जाय?

आदमी : (चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ जाती है) यस सर, मैं अपनी तरफ से कोशिश करता हूं। मुझे उम्मीद है कि कोई न कोई रास्ता मिल ही जायेगा... थैंक्यू सर थैंक्यू... सबसे पहले तो हम इन तीन लफ्जों से शुरुआत करते हैं। शौचालय में लिखा हुआ था - 'शेवंता जित्ती हाय' सबसे पहले शेवंता । यह एक विशुद्ध ग्रामीण शब्द है। मराठी जबान का ग्रामीण शब्द। अब जरा 'जित्ती हाय' इन दो शब्दों पर ध्यान दें। गंभीरता से सोचने की जरूरत है। भाषा शास्त्री जानते हैं कि इस तरह का वाक्य प्रयोग सिर्फ देहात में ही होता है। महाराष्ट्र के देहातों में। इससे एक बात तो साफ हो जाती है कि शेवंता, एक महाराष्ट्रीयन औरत है। निश्चित ही यह किस्सा महाराष्ट्र का है। अब सवाल यह उठता है कि इसे लिखा किसने फर्ज करो कोई नौजवान इस वाक्य को लिखता, तो कैसे

लिखता... वह लिखता, 'शेवंता जिवंत आहे' एकदम स्टैंडर्ड मराठी। इसका मतलब हुआ 'जित्ती हाय' जैसा प्रयोग सिर्फ देहात में ही होता है। और जहां तक लिखने वाले का सवाल है... तो... वह औरत भी हो सकती है और मर्द भी। और मेरे खयाल से यह काम किसी अधेड़ उम्र के आदमी का ही है। अब आते हैं, तीसरे पायदान पर... मैं जानता हूं कि यह काम किसी औरत के बस का नहीं है कि वह किसी रेल्वे डब्बे के शौचालय में जाकर कुछ लिखने की हिम्मत करे।

कांबले : क्यों? औरतों को इतना कमजोर क्यों समझते हो !

आदमी : यहां कमजोर और ताकतवर का सवाल ही कहां उठता है। मसला तो रेल डब्बे के शौचायलय में लिखी गई भाषा का है। औरतें ऐसा काम क्यों नहीं कर सकती मैं बताता हूं आपको। इसलिए कि हमारे इस महान सांस्कृतिक धरोहर वाले भारत देश में, शौचालय साहित्य की उज्जवल परंपरा पर, सिर्फ मर्दों की मोनोपोली है। भारत जैसे महान देश में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में मर्दों की मोनोपोली है। तो सर, हम सौ फीसदी इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि इस वाक्य का रचनाकार एक अधेड़ उम्र का देहाती मर्द है ।

कांबले : (गुस्सा और खीझ) लेकिन मेरे बाप... शौचालय में क्यों और फिर रेल के शौचालय में ही क्यों? क्या दुनिया में लिखने के लिए और कोई जगह बची?

आदमी : इसकी भी कई वजहें हैं- मसलन, लिखने वाला चाहता होगा कि कोई उसे देखे नहीं। अगर इस जुम्ले के पीछे कोई साजिश छुपी होगी तो लिखने वाला अधिक सावधानी बरतेगा। अब सवाल रेल डब्बे के शौचालय का है। सो हो सकता है, लिखने वाले का मकसद इस बात को पूरे देश में फैलाने का हो। वह सारे हिंदुस्तान को बताना चाहता होगा कि शेवंता जीवित है। और हमारा देश सो रहा है, उसने ऐसा भी सोचा हो सकता है कि इतने बड़े और विशाल देश में इस खबर को पढ़कर शायद किसी संवेदनशील व्यक्ति की आत्मा जाग उठे और वह शेवंता को ढूंढ निकालना ही अपने जीवन का मकसद बना ले। इस तरह के और भी कई कारण हो सकते हैं, लेकिन मकसद एकदम साफ है - शेवंता को ढूंढ निकालना।

कांबले : कल्पना के घोड़े ही आसमान छू सकते हैं।

आदमी : हो सकता है। पर आप ही बताइये, आखिर कल्पना क्या है? यही न कि संभावनाओं के आधार पर बनाई गयी एक भ्रामक इमारत.

कांबले : इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम्हारी बात को सच मान ही लेना चाहिए।

आदमी : मैंने शेवंता को खोजने की दिशा में एक संभावित तरीके पर बात की है। कल्पना पर तो किसी की मोनोपोली नहीं है। कोई दूसरा शख्स इससे बेहतर रास्ता बता सकता है।

कांबले : फोर एक्जाम्पल?

आदमी : मसलन 'शेवंता जित्ती हाय' यह एक संकेत हो सकता है, जिसका संबंध, संभव है राष्ट्रपति की हत्या से हो। कोई वफादार अपने बॉस को संकेत दे रहा हो कि शेवंता का बंदोबस्त किया जा... वह अभी तक जिंदा है। यह भी हो सकता है कि शेवंता की हत्या कर दी गई हो और उसके रिश्तेदारों को गुमराह करने के लिए यह बात फैला दी जाय कि शेवंता मरी नहीं जिंदा है। वगैरह वगैरह... कई तरह से संभावनाएं तलाशी जा सकती हैं।

कांबले : और यह भी तो हो सकता है कि कोई पढ़ा लिखा चतुर शख्स... शेवंता की हत्या कर देता है और लोगों को आंखों में धूल झोंकने के इरादे से, खुद ही शौचालय में लिख देता है कि 'शेवंता जित्ती हाय'- क्यों इस बात की पोसिब्लिटी है कि नहीं...

आदमी : क्यों नहीं... होने को तो कुछ भी हो सकता है।

कांबले : और फिर उसने सोचा... क्यों न इस बात को पुलिस की नजरों में लाया जाय... देट्स राइट... और फिर उसने अपना काम विधिवत शुरू कर दिया... और तुम जानते हो... वह कर भी रहा है ...

आदमी : (एकदम सकपका जाता है) मेरा... मैं... आप क्या कहना चाहते हैं?

कांबले : (गरदन पकड़कर पेट में जोर से घूंसा मारता है) यू रास्कल! पुलिस को इतना मूर्ख समझते हो? (फिर लगातार उसे मारता रहता है और पूछता रहता है) बता... कहां है शेवंता...

आदमी : मुझे नहीं मालूम... मैं तो आपसे जानने आया था...

कांबले : बता... क्या किया तुमने उसका... कहां छुपा रखा है?

आदमी : मेरा उससे कोई तुक नहीं है... मैंने तो उसे अभी तक देखा भी नहीं है।

कांबले : बता... कहां मारा है तुमने उसे। कहां छुपा कर रखा है। सच-सच बता... नहीं तो चमड़ी उधेड़कर रख दूंगा... (उसको घिसटते हुए कोठड़ी तक ले जाता है... मारता रहता है... पूछता रहता है... इतने में फोन की घंटी बजती है... कांस्टेबल पिसाल भागता हुआ आता है। चाय का गिलास टेबल पर रखकर, फोन की तरफ लपकता है। रिसीवर उठाता है...)

पिसाल : हेलो, नमस्कार... कांस्टेबल पिसाल बोल रहा हूं. (माउथ-पिस पर हाथ रखकर) साहेब गोन्सालविस साहेब का फोन।

कांबले : (आदमी को छोड़कर तुरंत फोन लेता है) सर, कांबले स्पीकिंग... यस सर... आपका फोन आया था ... लोकेशन पता नहीं था, सो फोन नहीं कर पाया... सर कुछ खास, यस, यस सर, आई नो सर, सर वाट ए कोइंसीडेंट– सर आप विश्वास नहीं करेंगे... पर सर, लेट मी टेल यू सर... इट जस्ट... महज इत्तफाक है.... हम लोग अक्सर यह कहते रहते हैं सर, कि गुनाहगार चाहे कितना ही चालाक क्यों न हो, अपना विजीटिंग कार्ड तो छोड़ ही जाता है। अजीब बात है न सर, यहां तो उससे भी कुछ ज्यादा एक करिश्मा ही हो गया. नो सर, गुनहगार खुद अपना कार्ड लेकर हाजिर हुआ है... यस सर, आइ एम नोट हड्रेड परसेंट शुअर... ...बट आई विल लेट यू नो सर... डेफीनेटली, सर... थैंक्यू वेरीमच सर... ओके सर! (फोन रखता है और एक ताजे उत्साह के साथ आदमी की तरफ देखता है। धीरे-धीरे बेल्ट खोलता हैं, उसे हिलाते हुए कोठड़ी में दाखिल होता है... मंच पर आहिस्ता से अंधेरा हो जाता है और आदमी से पूछताछ का दौर चलता है, भीतर से चीखने और मारने की आवाजें आती रहती हैं... फिर अचानक शांति छा जाती है।)

अंक एक / प्रवेश दूसरा

(कुछ देर बाद फिर से कोठड़ी में प्रकाश होता है। आदमी पेट में घुटने दबाये-घुटनों पर सिर को रखे, चुपचाप बैठा है। प्रकाश सारे मंच पर फैल जाता है... पिसाल पास की एक बैंच पर बैठा ऊंघ रहा है... कांबले की टेबल पर पानी का भरा हुआ गिलास रखा है... उसकी मौजूदगी का भान देता है... कुछ देर के बाद बाहर से कांबले की आवाज आती है।

कांबले : अरे कोई है? शिंदे-पिसाल-सालुंखे? कहां मर गये सब के सब? कल अगर कोई थाना लूट कर ले जाये तो– सब के सब साले कामचोर हैं... अरे ओ पिसालऽऽऽ

पिसाल : (अचानक जागता है और सलाम ठोंकता है) यस सर!

कांबले : यस सर के बच्चे... कहां मर गये सब के सब?

पिसाल : मैं क्या जानूं सर, मैं तो सो रहा था...

कांबले : महान काम कर रहे थे आप ... शर्म नहीं आती... ड्यूटी पर सोते हो और मुंह उठाकर कहते हो, सर मैं तो सो रहा था? इस ईमानदारी का क्या एवार्ड चाहिए... बोलो... सस्पेंड या डिसमिस... या समथिंग मोर...

पिसाल : आइ एम सॉरी सर... आईंदा ऐसी गलती नहीं होगी... इस बार माफ कर दो...

कांबले : और तुम्हारी एक गलती से मेरी नौकरी जाने का वक्त आ जाय तो... मैं किससे सॉरी बोलूंगा... और कौन सुनेगा मेरी सॉरी... जानते हो, अगर यह आदमी भाग जाता तो... मेरी तो सारी मेहनत पर पानी फिर जाता, और इज्जत का कचरा होता सो अलग...

पिसाल : (आजीजी करता हुआ) सर मेरा ध्यान था। मैं तो यहां से हिला तक नहीं... वह सो रहा था... तब मैंने सोचा थोड़ी सी झपकी लेने में हर्ज ही क्या है। इतने में...

कांबले : वह सो रहा है... यह कैसे हो सकता है? कांबले का प्रसाद खाकर आज तक कोई नहीं सो पाया... फिर यह कैसे सो सकता है... देख... देख... कहीं मर तो नहीं गया कम्बख्त... जा देख...

पिसाल : सच कह रहा हूं... यह तो रात भर ऐसे सो रहा था, जैसे कोई घोड़े बेच कर सो रहा हो...

कांबले : रात को उसे खाना दिया?

पिसाल : सामने से थाली लाया था, पर उसने खाने से इंकार कर दिया। हाथ भी नहीं लगाया...

कांबले : चाय-पानी... कुछ मांगा उसने?

पिसाल : कुछ नहीं, बार-बार दारू मांग रहा था...

कांबले : दारू? दारू भी मिलेगा बेटे! अच्छा सुन... एक-दो दिन खाने को कुछ मत देना... सारी दारू उतर जायेगी तो अपने आप ठिकाने आ जायेगी अक्ल।

पिसाल : (गंभीर मुद्रा बना कर) सर एक बात कहना चाहता... था...

कांबले : (इशारे से पूछता है) क्या?

पिसारा : मुझे लगता है सर, यह आदमी कुछ अलग ढंग का है... साधारण आदमी नहीं हो सकता... मैंने ऐसा आदमी पहले कभी नहीं देखा...

कांबले : कैसा आदमी?

पिसाल : सर मुझे लगता है– यह कोई सी. आई.डी. है।

कांबले : होश में तो हो?

पिसाल : जब वह बार-बार सोडोलीकर मर्डर केस का जिक्र कर रहा था तब ही मैंने सोच लिया था कि यह सी. आई.डी का बंदा हो सकता है।

कांबले : इसका मतलब मैं घास खाता हूं? इधर देख, आगे से मुझे फालतू का मशविरा नहीं चाहिए और अगर जबान बंद नहीं रखी तो...

पिसाल : सॉरी सर... आईंदा ऐसी गलती नहीं करूंगा।

कांबले : जब घोड़े को पानी दिखाने के लिये कहा जाय तो सिर्फ दिखाओ, यह मत पूछो कि पिलाना चाहिए कि नहीं...

पिसाल : यस सर!

कांबले : कोई फोन- ओन? मेसेज?

पिसाल : एक वायरलेस ऑपरेटर आया था।

कांवले : क्या मेसेज लाया?

पिसाल : आपने कल रात कुछ जानकारी मांगी थी ना?

कांवले : हां हां... एक लापता के बारे में...

पिसाल : बता रहा था कि कुछ मेसेज तो आया था लेकिन लाइन डिस्टर्ब होने की वजह से साफ सुनाई नहीं दे रहा था।

कांबळे : अच्छा?

पिसारा : कह रहा था दुबारा मंगवाया है।

कांबले : ओके! तुम्हें जिस काम की तैयारी के लिए कहा गया था, पूरी हो गई?

पिसाल : यस सर... एकदम पूरी.....

कांबले : बोतलें?

पिसाल : ले आया...

कांबले : और उन डिब्बियों को सम्हाल कर रखा है न... देख ली है... सब ठीक है?

पिसाल : यस सर, इंतजार ही कर रही हैं।

कांबले : वेरी गुड... जा, उस हरामखोर को जगा... सो रहा है, जैसे उसके बाप का घर है।

पिसाल : (कोठड़ी में जाता है उसे उठाता है) ए... उठ... ओ दारूड़िये उठ, साहेब बुला रहे हैं... उठ! (घसीटता हुआ कांबले के सामने ले आता है)

कांबले : गुड मोरनिंग... मि. सोमाजी गोमाजी कापसे... कहो, कैसी कटी रात... उतरा कि नहीं पंडिताई का नशा और दारू? वह तो अब तक फुर्र हो ही चुकी होगी... क्यों ठीक कह रहा हूं न?

आदमी : सर, पंडिताई का नशा मुझे कभी नहीं चढ़ा, जबकि मैं आपको बता दूं, पंडिताई का नशा चढ़ना तो मेरे खानदान का पुश्तैनी धंधा रहा है। मेरे पितामह को मनुस्मृति में मनुस्मृति की ठीक-ठीक परिभाषा करने के अलावा, बाकी सब कुछ जबानी याद था। उन्होंने अपनी इसी ताकत के बल पर, कामकोटी के शंकराचार्य तक को पछाड़ दिया। जहां तक दारू की बात है, तो सर, मैं आपसे कई बार गुजारिश कर चुका हूं कि आज कल मदिरा देवी मुझ से रूठी हुई है वरना जितनी चाहूं सेवन करूं कभी नहीं चढ़ती... अगर आप खुद इस बात का मुआइना करना चाहें तो मंगवाकर देख लीजिये... मर्जी, चाहे जितनी पिला लो... और इच्छा हो तो भगवद्गीता भी सुन लो... अगर एक बार भी जबान लड़खड़ा जाये तो आपकी जूती और मेरा सिर... क्यों है मंजूर?

कांबले : साले, हरामखोर, थाने में दारू मंगवाने की बात करता है। किस होश में है तू?

आदमी : होश में हूं... इसलिए तो दारू मंगवाने की बात करता हूं।

कांबले : लगता है अभी तक आसमान में उड़ ही रहे हो...

आदमी : मुझे लगता है सर, बार-बार, आपको गलतफहमी हो रही है... मैं तो बहुत ही विनम्र और शांत किस्म का शख्स हूं... मेरी पिछली दस पीढ़ियों में किसी ने चींटी तक मारने की हिम्मत नहीं की।

कांबले : कुछ भी हो, मैं तुम्हारे नाटक में फंसने वाला नहीं हूं... मैं तुम्हें ठीक करके ही रहूंगा... बड़ों-बड़ों को ठीक कर दिया है मैंने तुम्हारी तो औकात ही क्या है... इस डंडे को देख रहे हो... इसने ऐसी-ऐसी महान हस्तियों की जबानें खुलवा दीं, जिन्होंने मरना पसंद किया पर जबान खोलना नहीं... समझे?

आदमी : सर आपके कहने का मतलब यह है कि आपकी कामयाबी का श्रेय इस तुच्छ डंडे को जाता है।

कांबले : नो... नो... नो... माई डियर... अपने मतलब का मीनिंग निकालने की छूट मत लो। मेरी कामयाबी का श्रेय तो मेरी मेहनत और ईमानदारी को जाता है... इस डंडे को नहीं... यू नो... आय एम द मोस्ट ओबिडियंट गॅवर्नमेंट सरवेंट ... सिर्फ काम, काम और काम! राउंड द क्लॉक ऑन ड्यूटी; नथिंग एल्स... समझे? और जब से मैं नौकरी पर लगा हूं, मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने कभी एकाध दिन की भी छुट्टी ली हो...

आदमी: जरा दिमाग पर जोर दीजिये... आप कुछ भूल रहे हैं... आपने अपने कैरियर में एक नहीं, दो बार छुट्टी ली... एम आई राइट?

कांबले : (हल्का सा हंसता है) ओ... आई सी... तुम्हें तो मुझसे ज्यादा मालूम है, तो लगे हाथों यह भी बता दो कि मैंने पहली बार कब छुट्टी ली थी?

आदमी : (तंज और हल्का सा गुस्सा) उस दिन... उस दिन... जिस दिन विद्या सोडोलीकर का मर्डर हुआ था।

कांबले : (आश्चर्यचकित) हूंऽऽऽ एकदम ठीक... और दूसरी बार?

आदमी : उस दिन, जब कोर्ट ने आपको निर्दोष साबित कर... यूं ही छोड़ दिया... (मुस्कराता है)

कांबले : करेक्ट... एकदम सही... शाबाश... क्या याददाश्त है... भई वाह... मान गये... अब छोड़ो, इन फालतू बातों में क्या रखा है... वह तो मेरी ड्यूटी का एक हिस्सा था।

आदमी : नो... नो... सर, यह इतने हल्के-फुल्के ढंग से लेने वाली घटना नहीं है... मेरा मतलब दुघर्टना नहीं है। इट इज वैरी सीरियस मैटर... आप जैसा बिजी अफसर फालतू कामों के लिए कभी छुट्टी नहीं लेता... मामला निश्चित ही गंभीर रहा होगा। जरूर कोई खास वजह रही होगी?

काबले : क्या खास वजह हो सकती है, लगता है तुम्हारा दिमाग चल पड़ा है।

आदमी : सर, आप बात को टाल रहे हैं... लेकिन मुझे ठीक-ठीक याद है... विद्या सोडोलीकर मर्डर की वजह से आपको जबरदस्त आघात पहुंचा था... उस आघात से उबरने के लिए आपको छुट्टी लेनी पड़ी... और दूसरी बार, उस दिन, जब अपराधी होते हुए भी अदालत ने आपको निर्दोष बताते हुए बरी कर दिया था, आपने बरी होने का जश्न मनाने के लिए छुट्टी ली... एम आई राइट सर?

कांबले : (अस्वस्थ)

आदमी : मैं जानता हूं ये बातें आपको याद नहीं आयेगी। ऐसे वक्त पर याददाश्त जरूरत से ज्यादा काम करने लगती है। मैं आपको कुछ और याद दिलाऊं...

कांबले : (चिढ़ जाता है) बकवास बंद करो... जो कहना है साफ कहो...

आदमी : सब कुछ जानते हुए भी मुझसे सुनना चाहते हो तो फिर सुनो... आप जानते हैं कि विद्या सोडोलीकर पर बलात्कार हुआ था और यह भी जानते हैं कि कहां हुआ? फोरेस्ट डिपार्टमेंट के गेस्ट हाऊस में! वह गरीब औरत, वहां से किसी तरह भागकर मदद की भीख मांगते हुए आपकी शरण में आयी थी... आपने क्या किया?

हूं... एक अच्छे और ईमानदार पुलिस अफसर की तरह आपने क्या किया? शिकायत दर्ज करने से साफ इंकार कर दिया 'आई एम सॉरी' हेल्पलेस... मैं मजबूर हूं? क्यों यही थे न आपके अल्फाज? ईमानदार... ओबिडियंट पुलिस अफसर!

कांबले : झूठ... एकदम मनगढ़ंत... वाहियात... बकवास...

आदमी : इससे पहले कि आप तक विद्या पहुंचे... आपको बता दिया गया था कि इलाके के पालक मंत्री का सुपुत्र इस मामले में शामिल है। उसने आप पर वजन डाला... दो लाख रुपये हार्ड केश देने की पेशकश और दो सौ सब इंस्पेक्टरों की सिनियारटी को बराय ताक रखकर, आपको इंस्पेक्टर बनाने का वायदा! ... आप अपने आप को जितना महान समझते हो न... उतने हो नहीं... उन दो लाख रुपयों ने और प्रमोशन की लालच ने आपकी महानता को कचरे की टोकरी में फेंक दिया। ठीक उसी क्षण से आपका पतन शुरू हो गया!

कांबले : लगता है... तुम्हारे भेजे में कल्पना का कोई नया दरवाजा खुल गया है। अरे मूर्ख, अदालत ने मुझे साफ-साफ लफ्जों में बरी कर दिया है और तुम मुझ पर रिश्वत लेने का इल्जाम लगाते हो... अदालत में तुम्हार जैसे मूर्खों के तर्क काम नहीं करते, वहां तो ठोस सबूत चाहिए, ठोस... समझे...

आदमी : शायद इसीलिए आप छूट गये...

कांबले : जज को मूर्ख समझते हो... अगर उसने मुझे निर्दोष छोड़ा था तो उसका कुछ तो पुख्ता आधार रहा होगा उसके पास!

आदमी : (तुच्छता से हंसता है) कोर्ट में... निर्दोष छूटना! इन द कोर्ट ऑफ लॉ! (हंसता है) इसमें क्या नयी बात है... हर आदमी जानता है कि आजकल कोर्ट क्या कर रहा है... आई थिंक, देअर इज नो इंडिपेंडेंट कोर्ट इन इंडिया!

कांबले : तुम न्यायालय की बेइज्जती कर रहे हो।

आदमी : (अनुसुना करके) न्यायालय... कहां मिलता है न्याय... असली न्याय तो सिर्फ एक ही जगह मिलता है ... सिर्फ एक जगह... और वह जगह है- आदमी का मन । सिर्फ आदमी का मन। अपने मन में आदमी खुद ही वादी - प्रतिवादी होता है। खुद ही न्यायाधीश होता है। मन की अदालत की एक ही खूबी है... वहां एक बार लिखा जा चुका रिकार्ड न तो बदला जा सकता है और न ही कांटा -छांटा जा सकता है।

कांबले : काट-छांट, रिकॉर्ड... वाट इज देट... वाट डू यू मीन?

आदमी : यू नो, वॉट आई मीन! अगर आपकी इच्छा हो तो... इस मामले को दुबारा खोला जाय? क्या यह गलत है कि पहले विद्यापर बलात्कार किया गया और फिर उसका कत्ल कर दिया गया? लेकिन इस हकीकत को दबा दिया गया। अदालत में यह साबित कर दिया गया कि उसने आत्महत्या की है। आपने क्या किया... आपने तो इस मामले के कागज-पत्रों में काट-छांट करके बलात्कार से भी ज्यादा घृणित काम किया... फिर भी कहते हो, अदालत ने आपको निर्दोष... बरी किया है!

कांबले : इट इज ऐनफ नाऊ! स्टाप इट! अंट-संट बकते जा रहे हो... क्या लगती थी विद्या तुम्हारी?

आदमी : कुछ भी नहीं... मेरे लिए तो जैसी शेवंता वैसी विद्या...

कांबले : क्या रिश्ता था विद्या सोडोलीकर के साथ?

आदमी : आपने सुना नहीं... कुछ नहीं... नो रिलेशन...

कांवले : शेवंता तुम्हारी क्या लगती थी?

आदमी : (चिढ़कर) आई टोल्ड यू... नथिंग... नथिंग...

कांबले : अगर कुछ नहीं लगती थी... तो फिर यह उत्पात क्यों?

आदमी : नाइंसाफी के साथ मेरी पुश्तैनी दुश्मनी! और यही मेरे जिंदा रहने का मकसद! यह अन्याय, यह नाइंसाफी मुझे नोंच-नोंच कर जगाती रहती है... अगर मैंने अन्याय को नहीं पहचाना होता तो मुझ में और किसी मुर्दे में कोई फर्क ही नहीं रह जाता। दो मामलों में ताजिंदगी समझौता नहीं करूंगा - एक अन्याय से दुश्मनी के मामले में और दूसरा दारू से दोस्ती के मामले में! अन्याय सहन नहीं होता और दारू का मोह नहीं छूटता.... अब मैं क्या करूं?

कांबले : (व्यंग्य मुद्रा में) तो दारू मंगवायी जाय?

आदमी : (रिलेक्स) नेकी और पूछ पूछ... आप तो मेरी इज्जत बढ़ा रहे हैं... धन्यवाद... फिर देर किस बात की? कल से एक बूंद भी गले के नीचे नहीं उतरी... (थोड़ा गंभीर होकर) लेकिन एक बात का खयाल रहे... दारू मंगवायी जाय, लेकिन मेहरबानी करके नहीं... मेरा हक समझकर... अगर सम्मानपूर्वक पिलाते हो तो मंजूर!

कांबले : हक? सम्मान? यह किस खुशी में? कौन-सा तीर मारा तुमने?

आदमी: शेवंता को ढूंढ निकालने का सुनहरी मौका आपको देना! क्या यह हिमालय की चोटी पर चढ़ने से कम बड़ा काम है? एक ऐसा काम है... अगर कर पाये... तो समझो... अतीत के सारे पाप धुल गये...

कांबले : मेरा अतीत इतना खराब है? क्या सबूत है तुम्हारे पास?

आदमी : सबूत भी है पर, फिलहाल... हम मानकर चलते हैं कि आपसे अतीत में कुछ पाप हुए हैं - डरो नहीं... इसमें आपका फायदा ही फायदा है।

कांबले : समझा नहीं–

आदमी : खैर जाने दो, माना आज तक आपने कोई पाप नहीं किया... या यूं कहें कि आज तक आपके हाथों कोई पाप हुआ ही नहीं। फिर भी, फर्ज करो अतीत में किसी मामले में आपकी फजीती हो गई... उस फजीती की भरपाई करने का गोल्डन चांस... और अगर अतीत में आपसे कोई पाप हो गया हो और आपकी इच्छा है कि किसी तरह उसका प्रायश्चित हो जाय... तो सर, शेवंता को ढूंढ कर यह प्रायश्चित किया जा सकता है - आप चाहें तो... आई थिंक... यू गोट इट .... डू यू सर?

कांबले : कुछ कुछ ! लेकिन तुम्हारे बारे में तो एक बात समझ में आ ही गई है!

आदमी : क्या?

कांबले : बताऊंगा... जरा सब्र करो... इतनी जल्दी क्या है? (आवाज देता है) पिसालऽऽऽ

पिसाल : यस सर?

कांबले : जरा वो सामान देना–

पिसाल : लाया सर... (पास पड़े एक ट्रंक से कैदियों को बांधने वाली रस्सी निकालता है... फिर दोनों मिलकर आदमी के हाथ बांध देते हैं। आदमी इस अनपेक्षित हरकत को देखकर अचम्भा करता है... आपस में खींचातानी चलती रहती है)

आदमी : यह क्या कर रहे हैं आप लोग? मुझे क्यों बांध रहे हो? यह तो गजब हो गया... आप एक गलत आदमी को बांध रहे हैं... मेरी भावनाओं को कुचल रहे हैं... आखिर यही हुआ ना? वादा दारू मंगवाने का और लाई गई रस्सी! आप नहीं जानते हैं आप किसे बांध रहे हैं... आप लोग उस शख्स को बांध रहे हैं जिसने कभी अन्याय बरदाश्त नहीं किया! चोर को छोड़, साहूकार को बांधना - यह कहां का न्याय है?

कांबले : अगर तुम अपनी खैर चाहते हो सीधे-सीधे मेरे सवालों का जवाब देते रहना... अधिक समझदारी दिखाई तो समझ लो, मुझसे बुरा कोई नहीं होगा... और तुमने सच्चाई बता दी तो मैं तुम्हें दारू में नहला दूंगा... सोच लो... नाऊ द बॉल इज इन योर ग्राउंड...

आदमी : इसमें सोचना क्या है? कहा न... कल से एक कतरा भी हलक के नीचे नहीं उतरा। तुम लोगों को चाय-पानी और भोजन की जरूरत होती है न, ठीक वैसे ही मुझे भी दारू की जरूरत होती है। यह मेरा शारीरिक स्वभाव है। मुझे जल्दी दारू चाहिए और वह भी बाइज्जत बा मुलाहिजा!

कांबले : (एक मुक्का घर देता है) मादरचोद... अभी का अभी दारू और वह भी बाइज्जत बामुलाहिजा? ये ले! (एक और मुक्का मारता है) तुम भले ही खुद को पोरस समझते रहो, लेकिन याद रख... मैं कतई सिंकदर नहीं हूं।

आदमी : (मार सहलाते हुए) वाहऽऽऽ बहुत अच्छा, कल से अब तक एक अच्छा सेंटेंस बोले और अफसोस वह भी गलत! मैं आपको बता दूं कि पोरस को कैद करके सिकंदर के सामने पेश किया गया था और मुझे, यहां आने के बाद कैद किया गया। इन दो स्थितियों में रात दिन का फर्क है और दूसरी बात– सिंकदर एक बहादुर शख्स था... तुम्हारे जैसा कायर और हुकूमत का गुलाम नहीं!

कांबले : (क्रोध बढ़ जाता है) जबान पर लगाम दो, वरना खींच लूंगा। (गर्दन पकड़कर) बता कहां से आया है तू... क्या नाम है तुम्हारा... किस गांव के हो और कहां छुपाया है शेवंता को? (मारता है) बोल साले- नहीं तो बोटी-बोटी करके गिद्धों को खिला दूंगा।

आदमी : खयाल उम्दा है... गिद्धों को तलाशने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

कांबले : वाट डू यू मीन.....

आदमी : आई मीन पुलिसवाले हैं न?

पिसाल : (एक मुक्का मारता है) साला पुलिस को गिद्ध कहता है?

आदमी : (सहलाता हुए) कहता हूं... और खुले आम कहता हूं... इसमें जरा सा फर्क करने की जरूरत है... कांस्टेबल गिद्ध और इंस्पेक्टर गिद्धराज... गिद्धों के सम्राट!

कांबले : (भयंकर गुस्से में, साथ में आत्मग्लानि भी। पास में रखा पानी का भरा गिलास उठाता है और जोर से मुंह पर मारता है) मैं तुम्हें आखिरी चांस देता हूं... मिस्टर... (झुंझलाता है) क्या नाम है तुम्हारा...

आदमी : (दर्द से करहाता है) शंकर काशीनाथ जोशी.

कांबले : उम्र?

आदमी : चंवालीस। पूरे!

कांबले : गांव ठिकाना?

आदमी : तलेगांव, दाभाड़े, जिला- पुणे- महाराष्ट्र!

कांबले : (उसे छोड़कर रिलेक्स होता है) अब आया न लाइन पर? अरे तेरी तो औकात ही क्या है, मैंने बड़ों-बड़ों को दुरूस्त कर दिया...

आदमी : यह भी आपका भ्रम है। मेरे बाप ने भी बड़ी कोशिशें की, पर कुछ हाथ नहीं लगा... आप तो एक सीधे-सादे इंस्पेक्टर हो... सरकारी प्यादे...

कांबले : मतलब... यह मालूमात झूठी है?

आदमी : सरासर झूठी!

कांबले : यू बास्टर्ड!

आदमी : खामखां ब्लडप्रेशर क्यों बढ़ा रहे हो। नाम का कोई अर्थ- मतलब नहीं है। अगर मेरी असलियत लोगों को पता लग गई तो लोग बिना वजह परेशान होंगे। मेरे सत्कार समारोह आयोजित किये जायेंगे। मेरी मूर्तियां स्थापित करने के लिए समितियां गठित की जायेंगी वगैरह-वगैरह! इसलिए कहता हूँ, रहने दीजिये! आप शेवंता को ढूंढने के नेक काम में लग जाओ। इसमें आपका भला होगा ही, मेरा भी!

कांबले : इतनी नेक सलाह देने वाले, शायद तुम पहले ही गुनहगार हो। लेकिन तुम जैसों का घमंड तोड़ना मुझे खूब आता है।

आदमी : भई, इसमें नाराज होने की तो कोई वजह नजर नहीं आती... हां, इस बात का खयाल रहे कि मैं गुनहगार नहीं हूं।

कांबले : अब तक मैं यही समझता था लेकिन गोन्सालविस साहब के फोन के बाद, मैंने अपनी भूल सुधार ली है... अब इसमें कोई दो राय नहीं कि असली गुनहगार तुम्हीं हो...

आदमी : क्या कहा मिष्टर गोन्सालविस ने? यही न कि एक अनजान आदमी, एक औरत पर बलात्कार करके भाग गया?

कांबले : अरे वाहऽऽऽ, तुम तो भीतर की बातें भी जानते हो...

आदमी : और आपने क्या सोचा... वह अबला औरत शेवंता और बलात्कारी मैं– क्यों यही बात है न आपके मन में? (ऐसी हंसी हंसता है जिसे देख कर कांबले को और ज्यादा क्रोध आता है) ऐसा सिर्फ हिन्दी फिल्मों में होता

है। आप जानते हैं कौन बनाते हैं ऐसी फिल्में... चोर, डाकू, लफंगे, बदमाश, स्मग्लर, ऐसी फिल्में बनाकर वे अपनी अक्ल का दिवालियापन तो साबित करते ही हैं साथ में पुलिस डिपार्टमेंट की भी धज्जियां उड़ा देते हैं...

कांबले : तुम असली मुद्दे से मेरा ध्यान हटाना चाहते हो लेकीन मैं इतना बेवकूफ नहीं हूं, जो तुम्हारी इन बेहूदा बातों में आ जाऊंगा। चाहे कुछ भी हो, सच तो उगलवा कर ही दम लूंगा, क्या समझे मिस्टर... और इसके लिए मैंने एक जबरदस्त प्लान बना रखा है।

आदमी : इसके अलावा आपका काम ही क्या है... बर्फ की शिला पर लेटाकर मारना, बिजली के झटके लगाना और ज्यादा से ज्यादा डंडा चढ़ाना...

कांबले : क्यों डर गये?

आदमी : (ठंडी आह भरता है) इन सजाओं से डरने वाले वो महान लोग... अब कहां रहे...

कांबले : इतना घमंड?

आदमी : (हंसता है) कुछ भी कह लो

कांबले : देखें, कहां तक टिकते हो... पिसाल... ओ पिसाल...

पिसाल : यस सर...

कांबले : जरा वो डिब्बियां देना...

पिसाल : लाया हुजूर! (ट्रंक से दो छोटी डिब्बियां निकालकर कांबले को देता है)

कांबले : (एकटक आदमी की तरफ देखता है) मालूम है इनमें क्या है?

आदमी : और क्या होगा... एक में तंबाकू और दूसरी में चूना... खैनी खाकर, फिर आराम से मेरी धुलाई करेंगे... क्यों यही है न आपका जबरदस्त प्लान?

कांबले : मजाक करने से डर नहीं छुपाया जा सकता... समझे? अब कुछ ही लम्हों में तुम्हारी इस कॉमेडी को ट्रेजडी में बदल दूंगा, देखते रहो!

आदमी : अगर किसी नाटक की रिहर्सल करनी हो तो, हो सकता है इन डिब्बियों में मेकअप की सामग्री हो सकती है... करो... मुझे क्या एतराज हो सकता है?

कांबले : (क्रूर हंसी हंसता है) सावधान! इन डिब्बियों में भयंकर किस्म की चींटियां हैं। एक में काली और दूसरी में लाल। इन चींटियों का एक-एक डंक इतना जहरीला होता है कि काटने पर आदमी तड़प उठता है। अभी भी कई देशों में अपराधी का मुंह खुलवाने के लिए इनका इस्तेमाल किया जाता है... और फक्र की बात तो यह है कि ये महान चींटियां सातपुड़ा प्रदेश की पहाड़ियों में पायी जाती हैं। मैंने इन्हें बहुत मुश्किल से हासिल किया है। कई दिनों की भूखी हैं... इनके तो भाग्य जाग उठे... देखो न तुम्हारे लहू का स्वाद चखने को तड़प रही हैं...

आदमी : (निर्भयता के साथ) एक बात पूछूं सर? यह तो मुझे पता है कि आपकी इन महाभयंकर चींटियों के डंक मारने से मैं जरूर मुंह खोलूंगा और वही कहूंगा जो आप चाहते हैं लेकिन एक बात समझ में नहीं आयी... कि... ये दो अलग-अलग रंग की चींटियां रखने के पीछे आपका क्या मकसद है?

कांबले : इतने बुद्धिमान बनते हो, और इतनी छोटी-सी बात समझ में नहीं आयी?

आदमी : मैंने सोचा... आप है तब इन तुच्छ बात के लिए कौन दिमाग खपाये और फिर, अब तो आप जान ही चुके हैं... फालतू बातों पर दिमाग खर्च करने की मेरी आदत नहीं है।

कांबले : थोड़ा सब्र रख... तुम्हारे अंहकार का गुब्बारा फूटने ही वाला है। तो सुन, लाल और काली - दोनों कट्टर दुश्मन है। एक दूसरे को देखने की देर है - महायुद्ध शुरू हो जाता है और ऐसी हालत में, अगर वे किसी को डस ले... तो फिर उसका खुदा ही मालिक है। अब जब मैं इनकों तुम पर छोडूंगा तो देखना, किस तरह तुम एक ही साथ भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी शुरू करते हो। और यह भी देखना कि नाचते-नाचते किस तरह सच्चाई उगलने लगते हो। (डिब्बियों को आदमी के मुंह के पास ले जाता है और धीरे-धीरे डरावनी आवाज में बोलता है) बता कौन है तू... शेवंता के साथ तुमने क्या किया... (तेज आवाज में) कहां छुपाकर रखा है उसे? (बहुत ऊंची आवाज) मादरचोद बोल... (एक घूंसा घर देता है)

आदमी : (एकदम सहज है) मैं सच कह रहा हूं... 'शेवंता जीवित है' इस एक वाक्य के अलावा इस मामले में मैं अधिक कुछ नहीं जानता।

कांबले : यह बात, देख फिर पछताना नहीं पड़े...

आदमी : मैं कभी झूठ नहीं बोलता...

कांबले : अभी होगा झूठ-सच का फैसला... (डिब्बी का ढक्कन खोलता है उसे पकड़ता है और चींटियां कमीज के भीतर डाल देता है... और हंसने लगता है... आदमी देर तक अविचल रहने की कोशिश करता है लेकिन आखिर में अपना नियंत्रण खो देता है)

आदमी : (चिटियों से बाते करना लगता है) जरा आहिस्ता आहिस्ता- कोई भागा थोड़े जा रहा हूं... मेरी प्यारी बहनो! साहब ने गुदगुदी करने को तो कहा नहीं... काटने को बोला है... तो फिर काटती क्यों नहीं मारो... मारो... डंक मारो... पर एक बात का खयाल रखना। मेरे लहू में दारू ही दारू भरी पड़ी है... मुझे काटोगी तो तुम्हें भी नशा हो जायेगा और फिर नहीं काट सकोगी... (हंसता है वेदना सहन करता है... यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती हैं)

कांबले : अब भी वक्त है... बता दे... शेवंता को कहां छुपा रखा है। मारकर कहीं फेंक तो नहीं दिया?

आदमी : मुझे कुछ मालूम नहीं...

कांबले : अभी हो जाता है... (दूसरी डिब्बी की चींटियां भी कालर के भीतर डाल देता है) देख... याद कर... कहीं दिखाई देती है शेवंता? (आदमी पीड़ा से कराह उठता है)

आदमी : कहाऽऽऽ न मुझे नहीं मालूम...

कांबले : (गरदन पकड़कर) कहां छुपाया है शेवंता को?

आदमी : यह ढूंढना आपका काम है...

कांबले : विद्या सोडोलीकर तुम्हारी क्या थी?

आदमी : (इशारे से कुछ नहीं)

कांबले : (हिंसक मुद्रा में) नाम बता?

आदमी : शंकर काशीनाथ जोशी...

कांबले : झूठ... असली नाम बता !

आदमी : एस. के. डिसूझा

कांबले : फिर झूठ...

आदमी : उस्मान अहमद खां पठान

कांबले : एकदम झूठ

आदमी : रोबींद्र चटर्जी, होमर्सजी बाटलीवाला... कुलदीप सिंह...

कांबले : बोल... सच बोल... (मारता है) नहीं तो जान से मार डालूंगा... बोल, तुम्हारा असली नाम क्या है?

(मारता मारता रुक जाता है)

आदमी : असली नाम... मैं तो अपना असली नाम कब का भूल चुका हूं।

कांबले : (गुस्से में) भूल चुका हूं? मुझे ही चुतिया बनाता है?

आदमी : इसमें चूतिया बनाने की क्या बात है? मैं जानता हूं... नाम जितनी घृणित और अमानवीय चीज मैंने इस संसार में दूसरी नहीं देखी... "तुम्हारा नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा" आदि तमाम बातें एक धोखा है... भ्रम है... इन नामों के पीछे दुनिया में इतना खून बहा है कि मुझे नाम से ही घृणा हो गई है। मत पूछो मुझे अपना नाम... कोई नाम नहीं है मेरा, या फिर ये सारे नाम मेरे हैं... क्या होगा ज्यादा से ज्यादा मर ही जाऊंगा न? दो लाइन का पंचनामा कर देना... लिख देना... आसमान पर शिल्प कोरने की कोशिश करनेवाला एक पागल आदमी मर गया... ऐसा मरा कि जैसे कि वह जन्मा ही न हो! (बोलते-बोलते बेहोश हो जाता है, उधर फोन की घंटी बजनी शुरू होती है।)

कांबले : (फोन उठाता है) हेलो... इंस्पेक्टर कांबले... गुड आफ्टरनून सर... कल जिस केस का आप जिक्र कर रहे थे... अच्छा... जी जी... क्या हुआ? अपराधी मिल गया? अच्छा अच्छा... यह तो बहुत ही अच्छा हुआ... कांग्रेच्युलेशन सर... बेहतर सर... यस सर! (आराम से फोन नीचे रखता है, कुर्सी का सहारा लेकर बैठता है) पिसाऽऽऽल... कहां मर गया तू?

पिसाल : यस सर?

कांबले : पानी दे...

पिसाल: (सामने से पानी से भरा गिलास लाकर कांबले को देता है। कांबले पानी पीते-पीते बड़ी करुणा भरी नजरों से आदमी को देखता रहता है... आदमी धीमे-धीमे कराहता रहता है... इतने में पिसाल एक कागज लाकर कांबले के हाथ में थमाता है...)

कांबले : (बिना देखे ही) क्या है यह?

पिसाल : वायरलेस मेसेज...

कांबले : (मेसेज पढ़ता है। पढ़ते-पढ़ते कुर्सी से उठ खड़ा होता है... कोठड़ी की तरफ जाता है... आदमी के सिर पर हाथ फेरना शुरू करता है... आदमी कराह रहा है। धीरे से आंखें खोलता है और कांबले को देखता है... कांबले बड़ी तत्परता से) पिसाल... ओ पिसाल... जल्दी आ...

पिसाल : (भागकर आता है) यस सर...

कांबले : वो बोतल दे!

पिसाल : (आश्चर्य से) यस सर... (और सामने ट्रंक में से दारू की एक बोतल निकालकर कांबले को देता है)

कांबले : (बोतल खोलता है... दारू के छीटें आदमी के मुंह पर मारता है और फिर धीरे से उसके मुंह से बोतल लगा देता है ... एकाध घूंट दारू हलक के नीचे उतरते ही आदमी होश में आता है।)

आदमी : (आहिस्ता... आहिस्ता...) धन्यवाद... थैंक्यू वेरी मच... 'देर आये दुरूस्त आये' ... कुछ भी हो... आपने अपने वचन का पालन किया... भारतीय संस्कृति का पालन किया... 'प्राण जाय पर वचन न जायी' का पालन किया... थोड़ी और देंगे? बड़ी मेहरबानी होगी!

कांबले : (सामने रखा गिलास उठाकर उसमें दारू डालता है, फिर आहिस्ता से आदमी के मुंह को लगा देता है) पी... आराम से... जी भरकर पी!

आदमी : (एक ही घूंट में खाली कर देता है) थैंक्यू सर... लेकिन इस मेहरबानी की कोई वजह?

कांबले : तुम्हें एक अच्छी खबर सुनानी है।

आदमी : अच्छी खबर? अच्छी खबर क्या हो सकती है?

कांबले : कल मैंने, कंट्रोल रूम से एक गुमशुदा आदमी की जानकारी मांगी थी...

आदमी : सो, मेरा क्या संबंध ह?

कांबले : जानकारी मिल गई है। (कागज दिखाता है) यह देखो!

आदमी : इसमें क्या लिखा है?

कांबले : इसमें लिखा है- सांगली जिले की मिरज तहसील में, नागलवाड़ी नामक गांव की एक औरत पिछले एक महीने से लापता है।

आदमी : उसका कुछ नाम तो होगा...

कांबले : शेवंता! हां, शेवंता!

आदमी : (अचानक चेहरे पर चमक आ गई) शेवंताऽऽऽ (सामने रखी बोतल उठाता है... गटागट पीने लग जाता है... कांबले और पिसाल आश्चर्य से देखते रहते हैं।)

मध्यंतर

***

(सूचना : या नाटकाची पूर्ण संहिता प्राप्त करून घ्यावयाची असल्यास वेबसाईटमध्ये दिलेल्या पत्त्यावर लेखकाशी संपर्क करावा. नाटकाचे सर्व हक्क राखीव आहेत. प्रयोगापूर्वी लेखकाची परवानगी घेणे बंधनकारक आहे. या नाटकाचे भाषांतर, रूपांतर, त्यावर आधारित चित्रपट, चित्रमालिका, वेब-सिरीज, त्याचे अभिवाचन, यूट्युब/ फेसबुकवरील किंवा कोणत्याही प्रकारच्या माध्यमातून पूर्ण किंवा अंशत: असा कोणत्याही प्रकारचा आविष्कार करण्यापूर्वी, तसेच त्याचे चित्रिकरण, ध्वनिमुद्रण इत्यादीपूर्वी लेखकाची परवानगी बंधनकारक.)

***